राष्ट्रीय संगोष्ठी

नई दिल्ली, 26 अप्रैल 2026

भारती महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के भारतीय ज्ञान परंपरा प्रभाग, एन.सी.डब्ल्यू.ई.बी., भारती महाविद्यालय, दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा कला, संस्कृति एवं भाषा विभाग, दिल्ली सरकार के संयुक्त तत्वावधान में "राष्ट्रीय संगोष्ठी" का भव्य आयोजन भारती महाविद्यालय सभागार में संपन्न हुआ। संगोष्ठी का विषय "भारतीय ज्ञान परंपरा के विविध आयाम : परम्परा, प्रासंगिकता और भविष्य" रहा।

कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. सलोनी गुप्ता के संरक्षण में तथा भारतीय ज्ञान परंपरा प्रभाग के संयोजन में किया गया। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि प्रो. भारतेंदु पाण्डेय, अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने भारतीय ज्ञान परंपरा की वैश्विक उपयोगिता तथा शिक्षा जगत में उसकी बढ़ती प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा आज भी मानवता के समक्ष उपस्थित अनेक चुनौतियों के समाधान प्रस्तुत करने में सक्षम है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. राकेश पाण्डेय, आचार्य, भौतिक विज्ञान विभाग, किरोड़ीमल महाविद्यालय ने भारतीय वैज्ञानिक परंपरा एवं आधुनिक विज्ञान के मध्य अंतर्संबंधों को रेखांकित करते हुए भारतीय चिंतन की वैज्ञानिक दृष्टि पर विचार व्यक्त किए।

सम्मानित अतिथि प्रो. सारिका कालरा, आचार्या, हिन्दी विभाग, लेडी श्रीराम महाविद्यालय ने भारतीय संस्कृति, साहित्य और भाषा की समृद्ध परंपरा को वर्तमान समय में नई पीढ़ी तक पहुँचाने की आवश्यकता पर बल दिया।

मुख्य वक्ता प्रो. शशि तिवारी, पूर्व आचार्या, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय ने भारतीय ज्ञान परंपरा के दार्शनिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक पक्षों का विस्तृत विवेचन किया। विशिष्ट वक्ता डॉ. तौमीर शर्मा, सहायक आचार्य, संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय तथा सम्मानित वक्ता डॉ. पुरुषोत्तम, सहायक आचार्य, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय (वेदव्यास परिसर) ने भारतीय ज्ञान परंपरा की समकालीन प्रासंगिकता, अनुसंधान की संभावनाओं तथा भावी दिशा पर अपने विचार रखे।

कार्यक्रम में विभिन्न महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के शिक्षकों, शोधार्थियों तथा विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की। प्रश्नोत्तर सत्र में प्रतिभागियों ने विषय से जुड़े अनेक जिज्ञासापूर्ण प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञों ने विस्तार से समाधान किया।

कार्यक्रम के अंत में आयोजकों ने सभी अतिथियों, प्रतिभागियों एवं सहयोगियों का आभार व्यक्त करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण, संवर्धन एवं प्रसार हेतु ऐसे

आयोजनों की निरंतरता पर बल दिया। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी ज्ञान-विमर्श, अकादमिक संवाद और भारतीय बौद्धिक परंपरा के पुनर्स्मरण की दृष्टि से अत्यंत सफल एवं सार्थक सिद्ध हुई।